بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुत्बः जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मूदा 06.11.2026 स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद,यू.के.
(نبوت महीने की तिथि 06,1405 हश)

तहरीक-ए-जदीद के बानवेवें (92) साल में पेश की जाने वाली माली कुर्बानियों का तज़किरा और तिरानवेवें (93) साल के आग़ाज़ का ऐलान।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba- 06.11.2026

محلہ احمدیہ قادیان پنجاب-143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ۔

तशहहुद, तअव्वुज़ और सूरः फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर, अय्यदहुल्लाहु तआला ने फ़रमायाः अल्लाह ताला कुरआन करीम में फ़रमाता हैः لَنۡ تَنَالُوا الۡبِرَّ حَتّٰی تُنۡفِقُوۡا مِمَّا تُحِبُّوۡنَ۔ यानी तुम हरगिज़ नेकी को पा नहीं सकोगे यहाँ तक कि तुम उन चीज़ों में से ख़र्च करो जिन से तुम मोहब्बत करते हो।

एक हदीस में आता है कि जब यह आयत रज़ि. नाज़िल हुई तो हज़रत तलहा रज़ि. ने अपना सबसे कीमती बाग़ जिसका नाम बरीहा था आप ﷺ की खिदमत में पेश कर दिया कि यही मेरी सबसे प्यारी जादाद है। इसके अलावा भी अहादीस में आता है कि बहुत से सहाबा रज़ि. थे कि जब भी जो माली कुर्बानी की तहरीक होती उसमें पेश पेश रहते और अपना माल आंहज़रत ﷺ की खिदमत में पेश करते थे और ये रोशन सितारे आज भी हमारे लिए मशाल-ए-राह हैं।

फिर अल्लाह ताला के वादों के मुताबिक इस्लाम का निशात-ए-सानिया (पुनर्जागरण) का दौर आया तो इस दौर में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तहरीकात पर सहाबा रज़ि. ने भी कुर्बानियां दीं इसलिए कि आप अलैहिस्सलाम ने सहाबा रज़ि. को इन कुर्बानियों का इदराक (बोध,ज्ञान,समझ) अता फ़रमाया था। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम एक जगह फ़रमाते हैं कि बेकार और निकम्मी चीज़ों के खर्च करने से कोई आदमी नेकी करने का दावा नहीं कर सकता। नेकी का दरवाज़ा तंग है। पस यह बात ज़ेहन-नशीन कर लो कि निकम्मी चीज़ों के खर्च करने से कोई इसमें दाखिल नहीं हो सकता। क्योंकि नस्स-ए-सरीह है لَنۡ تَنَالُوا الۡبِرَّ حَتّٰی تُنۡفِقُوۡا مِمَّا تُحِبُّوۡنَ। जब तक अज़ीज़ से अज़ीज़ और प्यारी से प्यारी चीज़ों को खर्च

न करोगे उस वक्त तक महबूब और अज़ीज़ होने का दर्जा नहीं मिल सकता। अगर तकलीफ़ उठाना नहीं चाहते और हकीकी नेकी को इख्तियार करना नहीं चाहते तो क्योंकर कामयाब और बामुराद हो सकते हो। क्या सहाबा-ए-किराम रज़ि. मुफ्त में इस दर्जा तक पहुंच गए जो उनको हासिल हुआ... बात यह है कि खुदा तआला की रज़ा-मंदी जो हकीकी खुशी का मोजिब है हासिल नहीं हो सकती जब तक आरिज़ी तकलीफें सहन न की जावें।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: यह वह रूह है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जमाअत में पैदा करने की कोशिश फ़रमाई। आपके सहाबा रज़ि. भी कुर्बानियों में इतने बढ़ गए कि आपको कहना पड़ा कि मैं देखता हूँ कि ऐसे भी हमारी जमाअत में दाख़िल हैं जिनके बदन पर मुश्किल से लिबास होता है, मुश्किल से चादर या पाजामा मय्यसर आता है और इख़्लास व वफ़ा और श्रद्धा और मोहब्बत देखकर तबीयत में हैरानी और तअज्जुब पैदा होता है। आपने जो तब्दीली पैदा फ़रमाई उसकी कोई और मिसाल नज़र नहीं आती।

आज कुर्बानी की रूह का इदराक जितना अहमदी को है किसी और को नहीं। आज हमें ऐसी मिसालें जमाअत में नज़र आती हैं। बहुत से हैं जिन्होंने कभी खलीफ़ा-ए-वक़्त को देखा भी नहीं। सिर्फ एम.टी.ए. पर तस्वीर देख ली या आवाज़ सुन ली मगर इख़्लास व वफ़ा में बढ़ते चले जाते हैं। दुनिया इन लोगों को नहीं जानती, ये लोग बज़ाहिर कम तालीम-याफ़्ता हैं लेकिन क़ुरआन करीम की तालीम का इदराक रखते हैं और उस पर अमल करने की कोशिश करते हैं।

एक मिसाल ग्वादेलोप के एक नौ-अहमदी की है जो हाल ही में जलसा सालाना बर्तानिया में भी शामिल हुए और मुझसे भी मिले। यहाँ देखा कि जमाअत किस तरह काम कर रही है। उन्हें बताया गया कि जमाअत का माली निज़ाम भी है और इस तरह लोग चंदा देते हैं और इससे इशाअत-ए-इस्लाम का क्या-क्या काम हो रहा है। इन कुर्बानियों के ख़र्च के मुतअल्लिक जब उनको बताया गया तो उन्होंने बड़ी ख़ुशी का इज़हार किया और कहा कि मैंने जलसा सालाना में अपनी आँखों से देखा है कि जमाअत किस तरह इन अमवाल को अल्लाह तआला की राह में ख़र्च करती है। मिश्री साहिब लिखते हैं कि इस वाक़िए का एक और ईमान अफ़रोज़ पहलू यह है कि जब तहरीक-ए-जदीद के चंदे का आख़िरी दिन था तो मेरे पास आए कि मेरा छह साल का बेटा है। यह उसकी तरफ़ से छह यूरो चंदा है। कहते हैं मैं अपने बेटे को बताता था कि जमाअत कैसे कुर्बानियाँ करती है। मैं उसको पार्क ले कर गया, झूलों की टिकट लेने लगा तो उसने कहा कि मैं आज झूलों पर नहीं बैठूँगा बल्कि ये पैसे मेरी तरफ़ से अल्लाह के रास्ते में दे दें। यह बज़ाहिर मामूली रक़म है लेकिन इस बच्चे की तरफ़ से अज़ीम कुर्बानी है।

गुनी कनाकरी का एक वाकया है कि तोला साहब एक अहमदी हैं जो बहुत गरीब हैं। उन्होंने अपना तहरीक-ए-जदीद का चंदा तीस हजार फ्रैंक लिखवाया। कहते हैं कि मेरी बेटी की शादी भी थी। मैंने इसके लिए रकम जमा की हुई थी। इसी दौरान मुअल्लिम साहब चंदा लेने आ गए। मैंने शादी के लिए जमा की गई यह रकम उनको दे दी कि चंदे में शामिल कर लें। इसके बाद अल्लाह तआला का भी ऐसा एहसान हुआ कि मेरा एक बेटा जो लंबे अरसे से

फ्रांस जाने के लिए घर से निकला था और उसका कुछ पता नहीं था बल्कि उसको इतनी देर हो गई थी कि हम समझते थे कि वह रास्ते में कहीं खुदा न खास्ता मर चुका है। अचानक एक दिन उसकी कॉल आई और उसने बताया कि मैं फ्रांस पहुंच गया हूं और यह भी बताया कि मैं आपके इख्राजात के लिए एक बड़ी रकम आपको भिजवा रहा हूं। तो कहते हैं कि इस बात से मेरे ईमान में बड़ा इजाफा हुआ कि चंदे की वजह से एक तो मुझे अपने बेटे की खबर मिल गई और अल्लाह ताला ने कई गुना बढ़कर मुझे रकम भी वापस कर दी।

अर्जेंटीना के मुरब्बी साहब लिखते हैं कि एक मुखलिस अहमदी हैं नासिर अरकीउन्स साहब जो अर्जेंटीना के पहले लोकल अहमदी हैं। मुल्क के प्रसिद्ध पत्रकार थे लेकिन कुछ साल से माज़ूर (दिव्यांग) हो चुके हैं। उनकी फैमिली मुस्तकिल माली तंगी का सामना कर रही है। बाज औकात दवाई के लिए भी पैसे नहीं होते। मुरब्बी साहब कहते हैं कि मैंने उनको कहा कि आपके हालात तो ऐसे नहीं कि चंदा दे सकें लेकिन अगर बरकत के लिए कुछ देना चाहें तो दे दें। इस बात को सुनकर उक्त सज्जन ने कुछ दिन बाद खुद संपर्क किया और बताया कि मैंने जमाअती अकाउंट में चंदे की रकम भेज दी है। देखा गया तो उन्होंने पच्चीस डॉलर की रकम भेजी थी। यह मामूली रकम है लेकिन उनके जाती हालात के पेश-ए-नज़र यह गैर मामूली कुर्बानी थी।

बेनिन का वाकया है कि एक नौ-अहमदी जिन्होंने ईसाईयत से अहमियत कबूल की थी। उनकी छोटी सी दुकान है। कहते हैं कि मेरे पास दस हजार फ्रैंक रकम थी। मेरी बेटी मेरे पास आई कि स्कूल इंतजामिया ने स्कूल से निकाल दिया है कि फीस नहीं दी। मैं स्कूल की फीस देने की तैयारी कर रहा था। इसी दौरान मुअल्लिम साहब तहरीक-ए-जदीद के हवाले से आए। मैंने वह रकम चंदे में दे दी। अल्लाह का ऐसा फ़जल हुआ कि उस रोज उसके बाद इतने ग्राहक आए कि दो लाख फ्रैंक कीमत के माल की बिक्री हुई और बहुत मुनाफा हुआ। चुनांचे मैंने उसी रोज फीस भी अदा की।

बहुत सारे लोग वाकात लिखते हैं कि हम माली कुर्बानियां करते हैं और दुआ करते हैं। दुआ के लिए मुझे भी लिखते रहते हैं। इन कुर्बानियों की वजह से उनके बिगड़े हुए काम संवर जाते हैं, बच्चों की इस्लाह हो जाती है।

कनाडा से नेशनल सेक्रेटरी तहरीक-ए-जदीद लजना इमाउल्लाह लिखती हैं कि एक लजना मेंबर अपना नाम न जाहिर करते हुए बताती हैं कि मैंने हमेशा अपनी हैसियत के मुताबिक चंदा अदा किया है। गत वर्ष जो मैंने खुतबा दिया तो उसमें मैंने हजरत अम्मा जान की मिसाल दी कि वह शुरू में अपना वादा लिखवातीं और फिर पूरा भी कर देतीं। वह कहती हैं कि मैंने सोचा इसपर अमल करूं और अपना वादा लिखवा दिया और अदा भी कर दिया जो कि दो माह की तनख्वाह के बराबर था। फिर अल्लाह की बरकातों को देखा जैसे कोई छुपा हुआ खजाना मिल गया है। बहुत सारे रुके हुए काम हो गए। एक घर बड़ी अच्छी कीमत में बिका। दूसरी जगह नया घर खरीदने की तौफीक मिल गई।

रूस के मुबल्लिग़ इंचार्ज लिखते हैं कि एक मुखलिस कुर्बानी करने वाले अहमदी हैं। उन्होंने एक रोज नमाज-ए-जुमा के बाद एक मुनासिब रकम मुझे दी। मैंने कहा कि आपका कोई बकाया नहीं है। कहने लगे कि मैं अपने आबाई (पैतृक) मुल्क गया था और वापस मास्को आया हूं तो मुझे दूसरे मुल्क के मुसाफिरों के साथ एयरपोर्ट पर रोक लिया गया। पहले भी इमीग्रेशन हुक्काम बड़ी छोटी-छोटी बातों पर लोगों को रोक कर वापस भेज देते हैं। मेरा ध्यान गया कि खुदा तआला की राह में खर्च करने से हमेशा काम हुआ है। मैंने अहद किया कि अगर मुझे वापस न भेजा गया तो अपने मुल्क जाने की टिकट के बराबर रकम खुदा की राह में दूंगा। आखिर पर मुझे छोड़ दिया गया और मैं अपने वादे के मुताबिक यह रकम दे रहा हूं।

अल्लाह के फजल से तहरीक-ए-जदीद का बानवेवें (92 वां) साल 31 अक्टूबर को खत्म हुआ। अब 1 नवंबर से तिरानवेवां (93) साल शुरू हो गया है और जमाअत ने इस साल में जो गुजरा है तहरीक-ए-जदीद की मद में 20.28 मिलियन की कुर्बानी की तौफीक पाई है। पिछले साल के मुकाबले में 7 लाख 27 हजार पाउंड ज्यादा हैं। चंदा दाताओं की तादाद में भी पिछले साल की निस्बत 46616 की वृद्धि हुई है।

इसके बाद हुज़ूर-ए-अनवर ने मजमूई वसूली के लिहाज से मुल्कों की पहली दस जमाअतों की पोजीशन का जिक्र फरमाया जिसमें ब्रिटेन पहले नंबर पर है। फिर हिंदुस्तान के दस सूबा की पोजीशन का जिक्र फ़रमाते हुए पहले नंबर पर सूबा केरल और फिर 10 जमाअतों की अलत्तरतीब (क्रमशः) पोजीशन का ऐलान किया कि हैदराबाद नंबर एक है। फिर कोयम्बटूर (तमिलनाडु) फिर नंबर तीन पे कादियान है फिर कालीकट है। मेलापालम है। बंगलौर है। केरंग है। केरोलाई है। कलकत्ता है और कन्नूर टाउन है।

हुजूर अनवर ने फ़रमाया कि तहरीक-ए-जदीद के चंदे से अफ्रीका की 6017 मसाजिद, 4200 मिशन हाउस और मुबल्लिगों व मुअल्लिमों के ख़र्च पूरे किए जाते हैं। नुसरत जहां स्कीम के तहत 13 मुल्कों में 620 स्कूल और 14 मुल्कों में 41 अस्पताल व क्लिनिक खिदमत अंजाम दे रहे हैं। इसके अलावा यूनिवर्सिटीयों, वसाइफ, 26 रेडियो स्टेशनों, एमटीए स्टूडियो और दुनिया के मुख्तलिफ मुल्कों में तबलीगी व तालीम मंसूबों की माली सहायता की जाती है। यह तमाम अजीम खिदमात अहबाब-ए-जमाअत की मुखलिसाना (निष्ठावान) माली कुर्बानियों से जारी हैं, जिनके महदूद वसाइल (सीमित साधन) से गैर-मामूली नताएज हासिल हो रहे हैं।

तहरीक-ए-जदीद और दीगर मरकजी चन्दों के जरिए जमाअती इख्राजात पूरे होते हैं, जो अहबाब की मुखलिसाना (निष्ठावान) कुर्बानियों और अल्लाह तआला के फजल से मुमकिन हैं। अल्लाह ताला तमाम कुर्बानी करने वालों के अमवाल व नुफूस में बरकत दे और उन्हें उत्तम फल प्रदान करे। आमीन।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक-9781831652
टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात,पंजाब - 18001032131